ISSN No. :2456-2645

ACADEMIC SOCIAL RESEARCH

(An International Research Journal)

(UGC Approved-47715)

Vol.3 (October to December,2017)
Part -IV

43. Distance learning - Reaching the goal of "Education for All"– नेहा मिश्रा एवं अनिल कुमार पाण्डा 122–124
44. The impact of multimedia approaches on society and culture – निधि शर्मा 126–127
45. वर्तमान परिदृश्य में शान्ति शिक्षा की आवश्यकता – प्रबल प्रताप सिंह 128–130
46. Technology is a need in the present scenario of education in progressive India– प्रीती कुमारी 131–133
47. वर्तमान परिवेश में शान्ति शिक्षा की आवश्यकता– प्रीती सिंह 134–135
48. Understanding water issues in India : Some Observations -अरविन्द कुमार सैनी 136
49. Liberalization, privatization and globalization of education in India - डॉ0 प्रताप कुमार पाण्डा 137–140
50. वंचित वर्ग व शैक्षिक अवसरों की उपलब्धता – रंजीता श्रीवास्तव 141–142
51. विद्यार्थियों के मानसिक तनाव के कारण एवं रोकथाम के उपाय - रश्मि जादौन 143–144
52. वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा का अधिकार सम्बन्धी अधिनियम में संशोधन की आवश्यकता –रेखा 145–146
53. Mental depression management for teachers and learner - डॉ0 एस0 सुरेश 147–149
54. State initiative to educational justice of marginalized community: An analysis of pilot project in Bihar– मो सद्दाम अली 150–153
55. Role of teacher eligibility test in the effectiveness of primary school teachers - संजय सिंह यादव 154–156
56. Right to education : Challenges and Opportunities – श्रीमती स्राचना सचदेव 157–159
57. शिक्षा का अधिकार - डॉ0 सरफराज अहमद 160–161
58. समाज और शिक्षा में बदलते मूल्य प्रतिमान– डॉ0 सरोज राय 162–165
59. शिक्षा का निजीकरण एवं व्यवसायीकरण - लक्ष्मीपति पाठक 166
60. शिशुओं के ज्ञान भण्डार पर रंगीन अधिगम सामग्री के प्रभाव का अध्ययन– सन्ध्या राजपूत एवं डॉ0 सुनील कुमार 167–169
61. Changing Scenario of Education in Progressive India - डॉ0 गीता देवी 170–171
62. Role of a teacher in progressive education and society – डॉ0 शुभम सक्सेना 172–173
63. Critical analysis on academic stress : Causes and preventions - श्वेता सिंह चन्देल 174–175
64. Evolution and present scenatio of technical skills in the management of E-waste in India–सोनू राम यादव 176–178
65. प्रगतिशील समाज और शिक्षा में समावेशी शिक्षा की भूमिका - डॉ0 शैलजा गुप्ता एवं सुरेन्द्र यादव 179–181
66. प्राथमिक शिक्षा में शिक्षण एवं अधिगम वातावरण की चुनौतियों का अनुशीलन – डॉ0 सुशील कुमार गौतम एवं डॉ0 प्रतिमा यादव 182–185
67. समाज के बदलते मूल्य एवं शिक्षा - मनीषा कुमारी विजय 186–187
68. प्रगतिशील समाज और शिक्षा में समावेशी शिक्षा की भूमिका –वर्षा जायसवाल 188
69. प्रगतिशील समाज और शिक्षा में समावेशी शिक्षा की भूमिका - विवेक कुमार एवं शैलेन्द्र कुमार 189–191
70. प्रगतिशील समाज में समावेशी शिक्षा की भूमिका – योगेश कुमार पाल 192–194
71. शिक्षा ही ज्ञान, योग सभ्यता का आधार – श्रीमती शिखा 195
72. शिक्षा का अधिकार अधिनियम की प्रासंगिकता – बुद्धबिलास पाल 196
73. वर्तमान समाज में समावेशी शिक्षा - डॉ0 रचना त्रिवेदी 197
74. Impact of liberalization and globalization on higher education – सन्ध्या सिंह 198–199
75. An empirical study on organizational culture in select Indian professional educational organizations of Kanpur(UP) – सन्ध्या सिंह 200–204
76. प्रगतिशील भारत में मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम के गुण–दोषों का अवलोकन- डॉ0 दीपालिका 205–206
77. भारतीय शिक्षा का निजीकरण : विविध आयाम- डॉ0 सुनीता जायसवाल एवं जसमीत कौर 207–209
78. प्रगतिशील भारतीय समाज और वैश्वीकरण – पूनम देवी 210–211
79. प्रगतिशील भारत में दिव्यांगजनों की समस्यायें एवं समाधान- प्रियंका गुप्ता 212–213
80. प्रगतिशील भारत में कौशल विकास योजना का एक परिदृश्य– डॉ0 अर्चना पाण्डेय एवं डॉ0 अरविन्द पाण्डेय 214–216
81. प्रगतिशील भारत में उच्च शिक्षा का गिरता स्तर : चुनौतियाँ एवं अनुशंसाएँ– सुमिता बाजपेयी 217–219
82. स्वच्छ भारत मिशन– नवीन चौरसिया 220–221
83. महिला सशक्तीकरण में शिक्षा की भूमिका : एक समीक्षात्मक अध्ययन– रजनी वर्मा 222–224
84. समावेशी शिक्षा का विकास और विकासशील समाज की स्थापना– पूजा यादव 225–227
85. स्वच्छ भारत अभियानः स्वच्छता व संरक्षण के प्रयास– सुमन यादव 228–230

*****

***

समाज और शिक्षा में बदलते मूल्य प्रतिमान

डॉ. सरोज राय
सहायक आचार्या
शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं–राजस्थान

शोध–सारांश

किसी भी समाज का विकास उसके अन्तर्निहीत मूल्यों के आधार पर किया जाता है। समाज अपने विकास की शृंखला में जितने उत्कृष्ट मूल्यों को स्थापित करता है, वह उतना ही स्थायी होता है। समाज के मूल्यों का दर्पण उस समाज में विकास करने वाले मानवों के व्यवहारों द्वारा उनकी शिक्षा में परिलक्षित होता है। मानव समाज के बहुत से आदर्श, विश्वास, व्यवहार, प्रतिमानों को अपनी रूचि व दक्षता के अनुसार अपनाता है, तथा वही अभिरूचियों जिन्हें उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों के समूह महत्व देते हैं वहीं उनकी संस्कृति की विशेषताएं बनकर इनके नैतिक नियमों के रूप में मान्य होकर मूल्य कहलाते हैं तथा हमारे जीवन के प्रति विचारों व दृष्टिकोणों को गहराई पूर्वक चिन्तन करते हुए शिक्षा में प्रमाणित करते है। भारतीय परम्परागत प्रणाली में समाज, शिक्षा व मूल्य को साथ–साथ समान अर्थों में समझा जाता है तथा एक ही सिक्के के पहलू के रूप में स्थापित भी किया जाता है क्योंकि हम किसी व्यक्ति के व्यवहार का निरीक्षण करके या उसके बारे में सूचनाएं प्राप्त करके उसके समाज शिक्षा तथा मूल्य प्रतिमानों के बारे में निष्कर्ष निकाल होते है। जब हम लोगों के कार्यों पर विचार करते हैं तब हम आसानी से यह कह देते हैं कि वह किस समाज से सम्बन्ध रखता है। मनुष्यों के जीवन दर्शन में भिन्नता से उनके मूल्यों में भिन्नता उत्पन्न होती है। जीवन दर्शन भी वातावरण तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तत्वों से प्रभावित होता है। अन्त में कह सकते हैं कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक परिस्थितियां हमें यह सोचने पर विवश करती है जैसे–जैसे भारत नगरीकरण व औद्योगीकरण की ओर उन्मुख हो रहा है वैसे–वैसे मूल्य प्रतिमानों से दूर होता जा रहा है। सामाजिक संघर्ष धार्मिक संघर्ष, राजनीतिक संघर्ष, आर्थिक संघर्ष, सांस्कृतिक संघर्ष को दूर करने तथा सुखी समृद्ध भारत की कल्पना हेतु उचित मूल्यों का विकास करने के लिए दहेज, नारी उत्पीडन चाहे व किसी भी रूप में घरेलू हिंसा, छेडखानी, बलात्कार कहीं न कहीं मूल्यों में भावनात्मक कमी हो रही है। अश्पृश्यता, भ्रष्टाचार, मादक पदार्थों का सेवन आज युवा इस तरफ तेजी से आकर्षित हो रहा है। कर चोरी, काला बाजारी, राजनैतिक भ्रष्टाचार शैक्षिक भ्रष्टाचार ये सभी समस्याएं सुखद भविष्य की कल्पना पर विराम चिह्न लगा दिया है। इसी कारण आज सामाजिक, शैक्षिक, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से आमनवीयता, अलगाववाद व संस्कृति विहीनता को दूर करके विद्यार्थियों में उचित–अनुचित का ज्ञान मूल्य शिक्षा द्वारा सम्भव है। समाज में विद्यमान मूल्य प्रतिमान भी समय के साथ बदल जाते है इसलिए मूल्य शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी सच्चाई, ईमानदारी, मानवीय गुण करूणा को सीखकर व्यावहारिक रूप में अपने आचरण में उतारने को प्रयास करते हुए शिक्षा समाज तथा मूल्यों को सीधे सम्बन्धित करते हुए विद्यालयी जीवन के मूल्यों के आधार पर संगठित करें जहां पर शिक्षा समाज, विश्व देश का कल्याण होना सम्भव हो। मूल्य आधारित शिक्षा को यन्त्रवत न मानते हुए शाश्वत मूल्य प्रतिमानों को जीवन मूल्यों की स्थापना के लिए विद्यार्थियों के जाग्रत करना होगा ताकि वे आधुनिक समय में व्यावहारिक रूप में स्वयं मूल्यों को धारित ही नहीं करें बल्कि समाज व शिक्षा पर उसका प्रभाव भी डाले। क्योंकि शिक्षा से व्यक्ति में पूर्णता आती है और विद्यार्थी पूर्ण तभी बनता है जब वह अपनी शिक्षा को समाज के लिए उपयोगी बनाये। शिक्षा से व्यक्ति को मानसिक दृढ़ता को बढ़ावा मिलता है और यहीं मानसिक दृढ़ता समाज को भी दृढ़ बनानें सहयोगी होती है। इस प्रकार आपसी सहयोग, समन्वय, स्वावलम्बन, सभी धर्मों, समाजों, सांस्कृतिक लक्षणों, सिद्धान्तों, आदर्शों, नैतिक मूल्यों, उच्च आदर्शों को परिष्कृत करते हुए शिक्षा व समाज के मूल्य प्रतिमानों को परिवर्तित से रोकने में प्रभावी व एक सशक्त कदम उठाने में सफल हो पायेंगे शायद तभी भारत विश्व गुरू का दर्जा प्राप्त कर पायेगा।

किसी भी समाज का विकास उसके अन्तर्निहीत मूल्यों के आधार पर किया जाता है। समाज अपने विकास की शृंखला में जितने उत्कृष्ट मूल्यों को स्थापित करता है, वह उतना ही स्थायी होता है। समाज के मूल्यों का दर्पण उस समाज में विकास करने वाले मानवों के व्यवहारों द्वारा उनकी शिक्षा में परिलक्षित होता है। मानव समाज के बहुत से आदर्श, विश्वास, व्यवहार, प्रतिमानों को अपनी रूचि व दक्षता के अनुसार अपनाता है, तथा वही अभिरूचियों जिन्हें उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों के समूह महत्व देते हैं वहीं उनकी संस्कृति की विशेषताएं बनकर इनके नैतिक नियमों के रूप में मान्य होकर मूल्य कहलाते हैं तथा हमारे जीवन के प्रति विचारों व दृष्टिकोणों को गहराई पूर्वक चिन्तन करते हुए शिक्षा में प्रमाणित करते है। भारतीय परम्परागत प्रणाली में समाज, शिक्षा व मूल्य को साथ–साथ समान अर्थों में समझा जाता है तथा एक ही सिक्के के पहलू के रूप में स्थापित भी किया जाता है क्योंकि हम किसी व्यक्ति के व्यवहार का निरीक्षण करके या उसके बारे में सूचनाएं प्राप्त करके उसके समाज शिक्षा तथा मूल्य प्रतिमानों के बारे में निष्कर्ष निकाल होते है। जब हम लोगों के कार्यों पर विचार करते हैं तब हम आसानी से यह कह देते हैं कि वह किस समाज से सम्बन्ध रखता है। मनुष्यों के जीवन दर्शन में भिन्नता से उनके मूल्यों में भिन्नता उत्पन्न होती है। जीवन दर्शन भी वातावरण तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तत्वों से प्रभावित होता है।

मूल्य आधारित शिक्षा की सोच समय की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है। किसी भी राष्ट्र की शक्ति, समाज, शिक्ष के द्वारा उसकी मूल्य प्रक्रिया को समझा जा सकता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में मूल्य समाज व शिक्षा को पर्याय के रूप में जान जाता है। राष्ट्र निर्माण की भूमिका में चरित्रवान शिक्षित व्यक्तित्व क निर्माण मूल्य आधारित शिक्षा व समाज से ही किया जाता है। समाज व व्यक्ति एक दूसरे के पूरक होते है एक के बिना हम दूसरें क अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकते है। मैकाइवर तथा पेज "व्यक्ति तथा समाज का सम्बन्ध एक तरह का सम्बन्ध नहीं है, इन से किसी एक को समझने के लिए दोनों को समझना आवश्यक है

अरस्तू के अनुसार– "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इस बात का सरल अर्थ यह है कि मनुष्य अपने अस्तित्व व विकास क लिए समाज पर जितना निर्भर है उतना और कोई प्राणी नहीं, मनुष में जो कुछ सामाजिक गुण है वह समाज की देन है। किसी भी व्यक्ति की प्रथम पाठशाला उसका स्वयं का परिवार होता है। जहां सबस पहले शिक्षा प्राप्त होती है। परिवार और समाज और शिक्षा के अनुरू उनके मूल्य प्रतिमानों में बदलाव होता है तथा उसी के अनुरू सामाजिक गुणों तथा विशेषताओं में भी परिवर्तन होता है। आज हमा समाज व शिक्षा का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है, जिस तरह से समाज में नैतिक मूल्यों में ह्रास होता जा रहा है, जो सही नहीं है।